Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

इतिहास

भाग - 2

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

भाग - 4

Pritesh Joshi

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

उत्तरी भारत में धार्मिक उफान

- 14 वीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में अलवार और नयनार संतों की रचनाओं जैसा कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ।
- हालांकि उत्तरी भारत में भी विष्णु और शिव जैसे देवताओं की उपासना मंदिरों में की जाती थी।

➤ **इस भिन्नता की क्या वजह हो सकती है ?**

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कुछ इतिहासकारों का मत है कि–

- उत्तरी भारत में यह वह काल था जब अनेक राजपूत राज्यों का उदय हुआ। इन सभी राज्यों में ब्रह्मणों का महत्त्वपूर्ण स्थान था और वे ऐहिक तथा आनुष्ठानिक दोनों ही कार्य करते थे।

ब्रह्मणों की इस प्रभुसत्ता को सीधे चुनौती देने का प्रयास शायद किसी ने नहीं किया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इसी समय वे धार्मिक नेता जो रूढ़िवादी ब्रह्मणीय साँचे के बाहर थे, उनके प्रभाव में विस्तार हो रहा था।
- अनेक नवीन धार्मिक नेताओं ने वेदों की सत्ता को चुनौती दी और अपने विचार आम लोगों की भाषा में सामने रखे।
- अपनी लोकप्रियता के बावजूद नवीन धार्मिक नेता विशिष्ट शासक वर्ग का प्रश्रय हासिल करने की स्थिति में नहीं थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

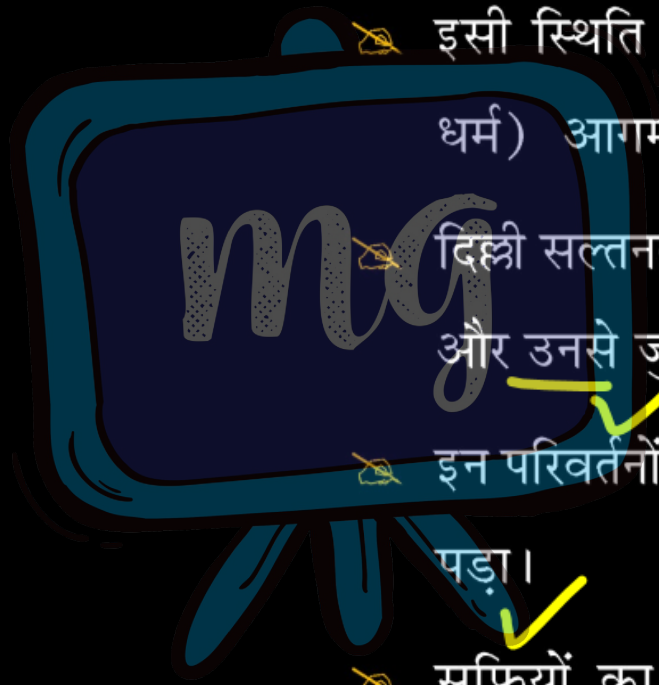

- इसी स्थिति में भारत में तुर्कियों का (इस्लाम धर्म) आगमन हुआ।
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना से राजपूत राज्यों का और उनसे जुड़े ब्रह्मणों का पराभव हुआ।
- इन परिवर्तनों का प्रभाव संस्कृति और धर्म पर भी पड़ा।
- सूफियों का आगमन इन परिवर्तनों का एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

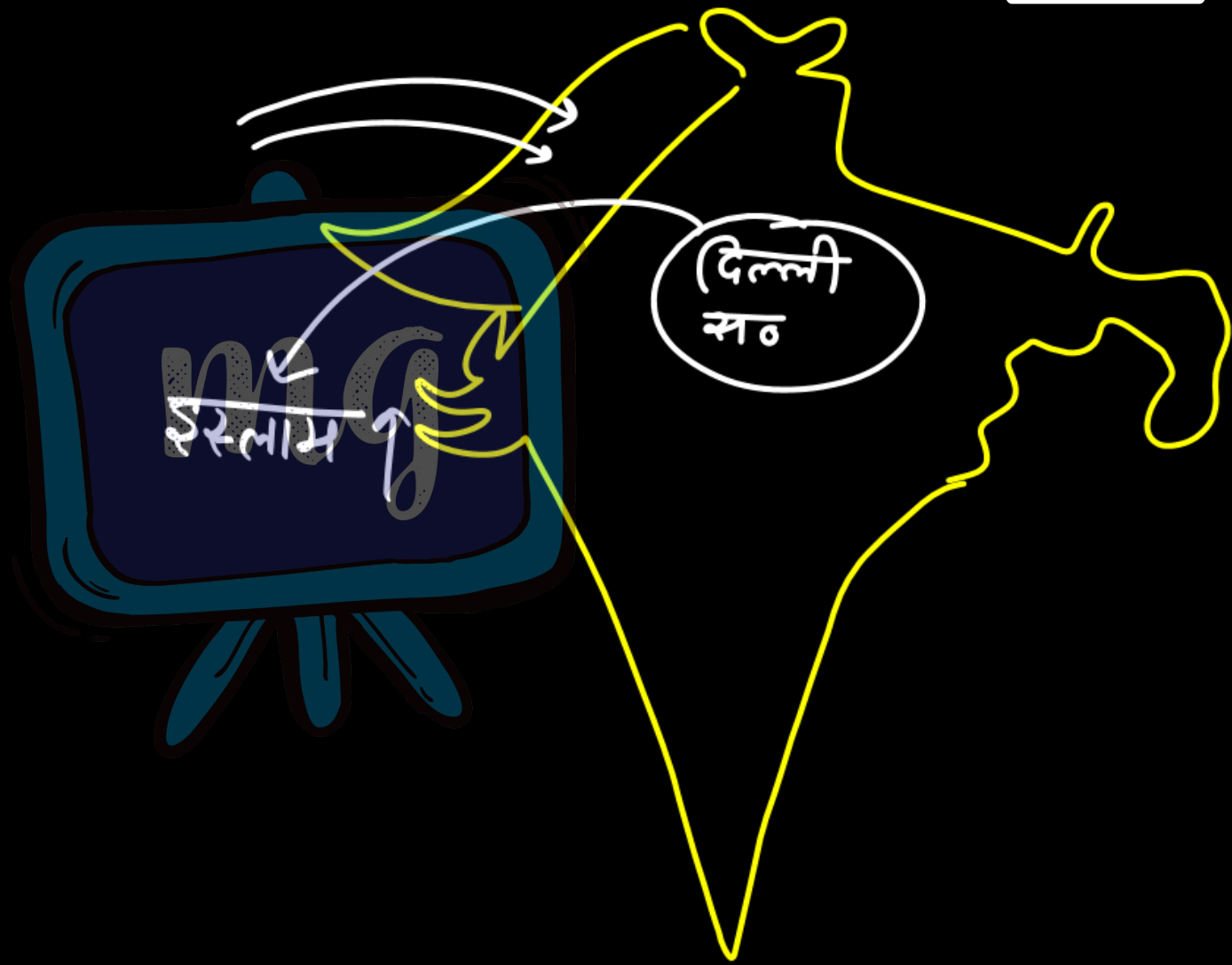

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

'हिन्दू' ⟶ आन्दोलन ⇒ भक्ति आ॰

'इस्लाम' ⟶ 'सूफी परंपरा'

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

'सूफी'

'सूफ' → ऊन का चोगा

'सफा' → पवित्र

इस्लाम → रहस्यवाद + संगीत + गुरु - शिष्य

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

'सूफी'

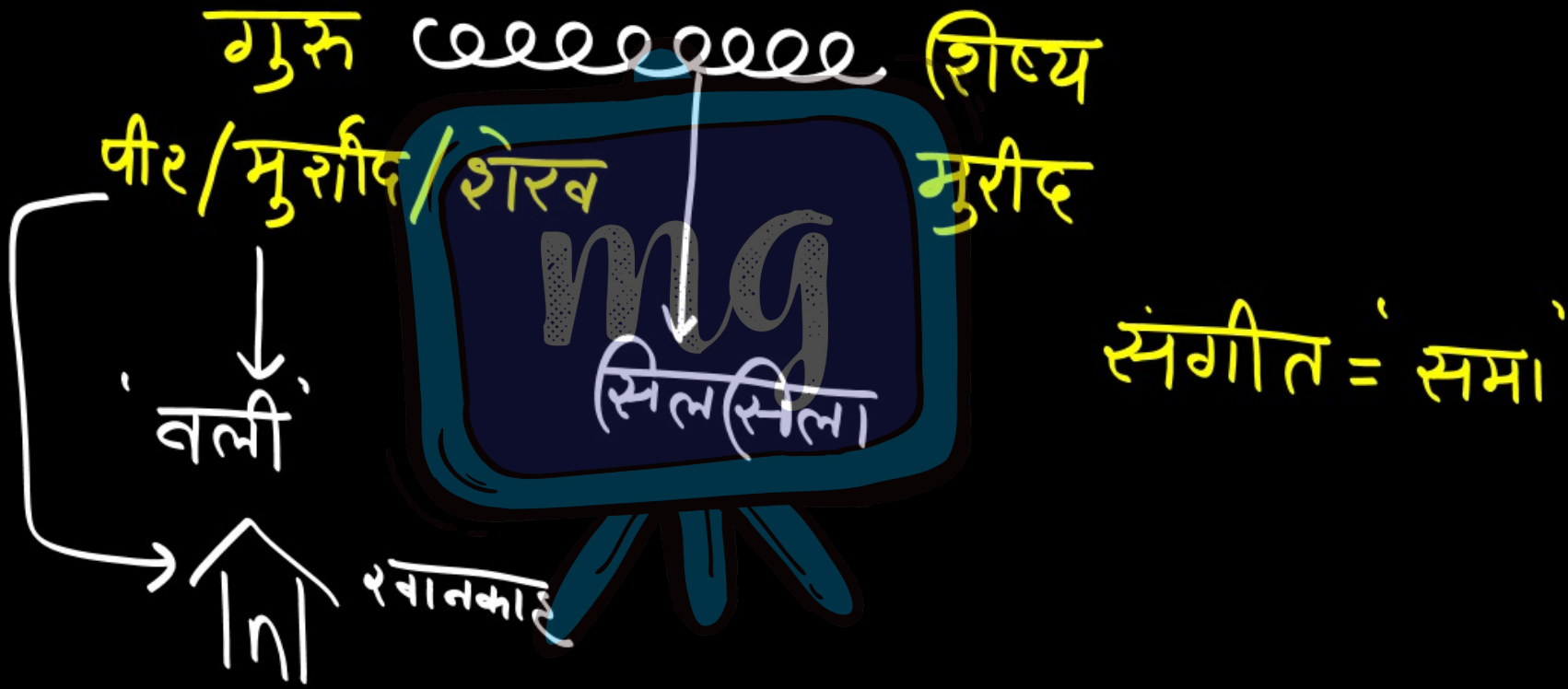

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

चिश्ती संप्रदाय

अजमेर – ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

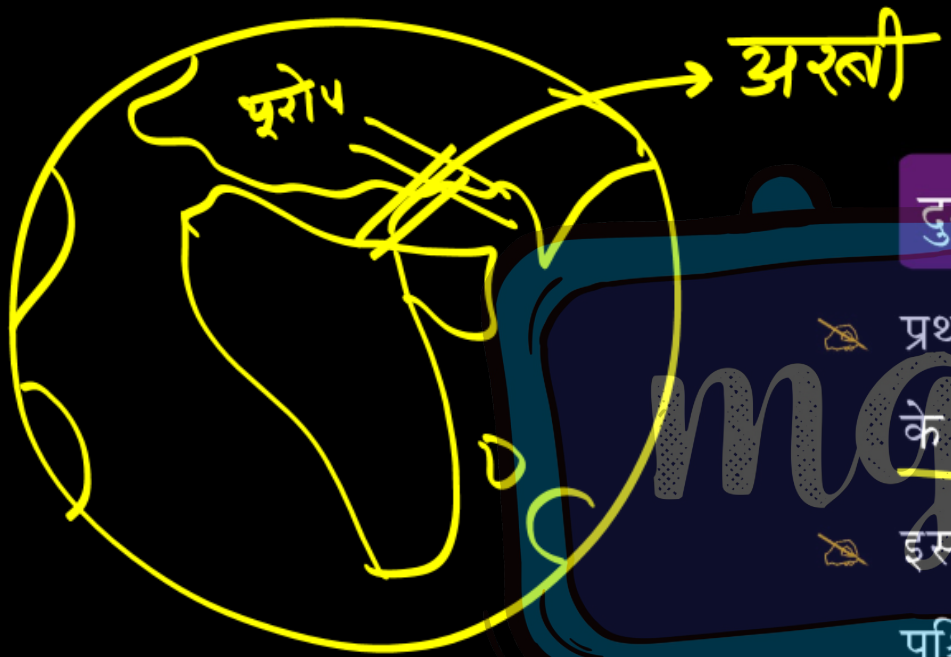

दुशाले के नए ताने-बाने: इस्लामी परंपराएँ

- प्रथम सहस्त्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुद्र के रास्ते पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए।
- इसी समय मध्य ऐशिया से लोग देश के उत्तर-पश्चिम प्रांतों में आकर बस गए।
- 7 वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद में यह क्षेत्र इस्लामी विश्व का हिस्सा बन गए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास

- 711 ईसवीं में मुहम्मद बिन कासिम नाम के अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया।
- बाद में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।
- समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सल्तनत की सीमा का प्रसार हुआ।
- इन क्षेत्रों में इस्लाम शासकों का स्वीकृत धर्म था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

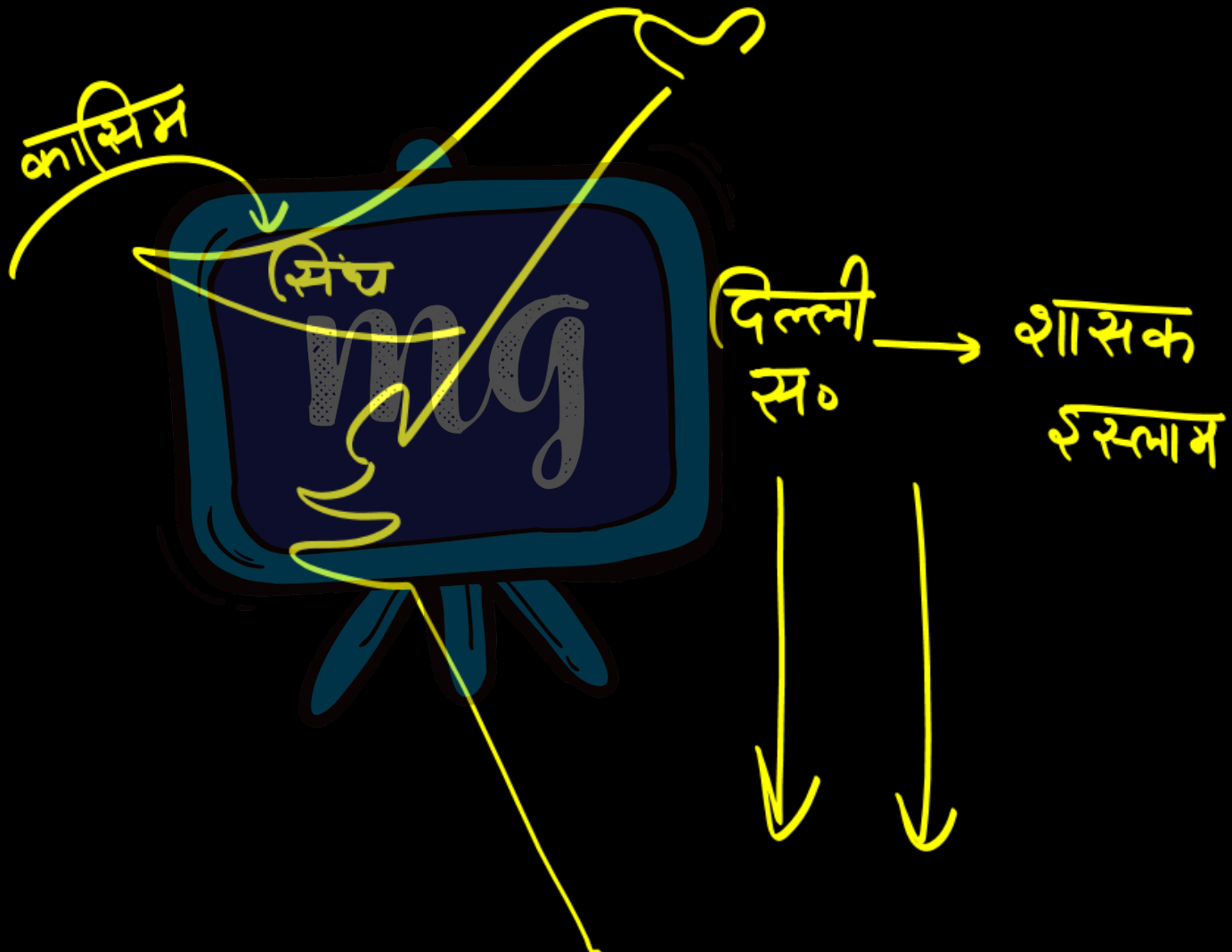

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था।
- उलमा :- इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे।
  - शासन के धार्मिक व कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

शरिया

शरिया मुसलमान समुदाय को निर्देशित करने वाला कानून है। यह कुरान शरीफ़ और हदीस पर आधारित है। हदीस का अर्थ है पैगम्बर साहब से जुड़ी परंपराएँ जिनके अंतर्गत उनके स्मृत शब्द और क्रियाकलाप भी आते हैं। जब अरब क्षेत्र से बाहर इस्लाम का प्रसार हुआ जहाँ के आचार-व्यवहार भिन्न थे तो क़ियास (सदृशता के आधार पर तर्क) और

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इजमा (समुदाय की सहमति) को भी कानून का स्रोत माना जाने लगा। इस तरह शरिया, कुरान, हदीस, क़ियास और इजमा से उद्भूत हुआ।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

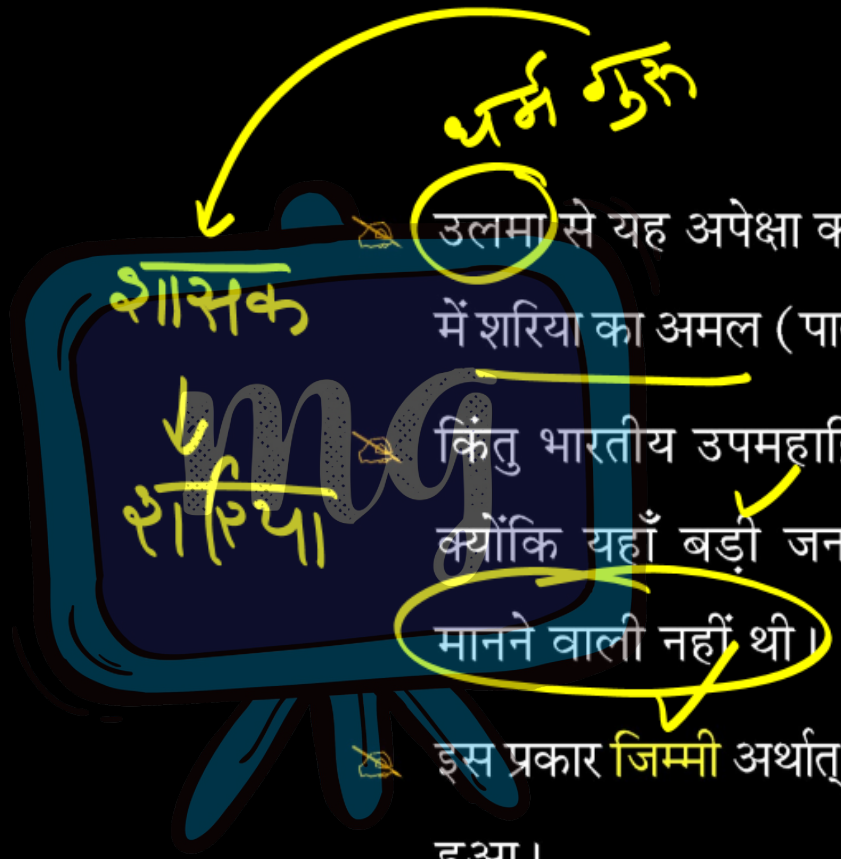

- उलमा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे शासन में शरिया का अमल (पालन) सुनिश्चित करवाएँगे।
- किंतु भारतीय उपमहाद्विप में स्थिति जटिल थी क्योंकि यहाँ बड़ी जनसंख्या इस्लाम धर्म को मानने वाली नहीं थी।
- इस प्रकार जिम्मी अर्थात् संरक्षित श्रेणी का प्रादुर्भाव हुआ।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

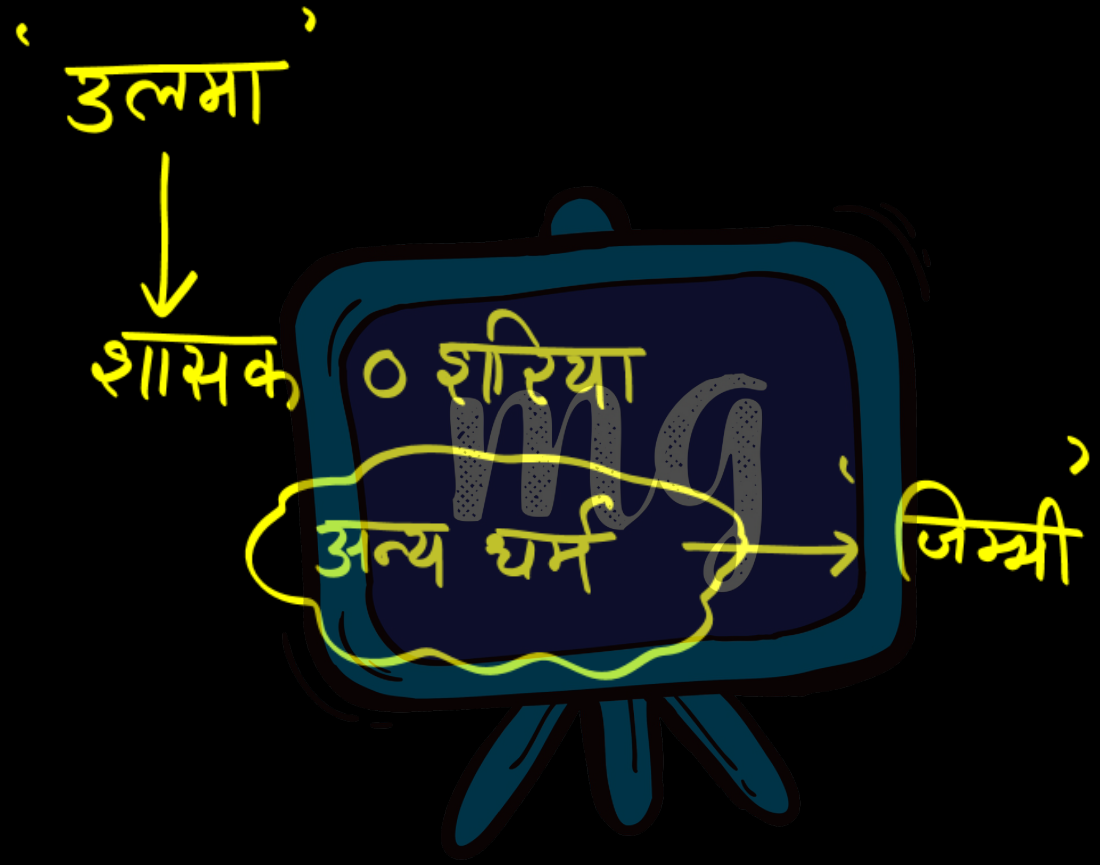

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जिम्मी :- जिम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रन्थ को मानते थे जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग जजिया नामक कर चुका कर मुसलमान शासकों द्वारा संरक्षण दिये जाने के अधिकारी हो जाते थे। भारत में इसके अन्तर्गत हिन्दूओं को भी शामिल कर लिया गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

वास्तव में शासक शासितों की तरफ़ काफ़ी लचीली नीति अपनाते थे। उदाहरणतः, बहुत से शासकों ने भूमि अनुदान व कर की छूट हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई और यहूदी धर्मसंस्थाओं को दी तथा साथ ही गैर-मुसलमान धार्मिक नेताओं के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त किया। ऐसे अनुदान, अनेक मुगल बादशाहों जिनमें अकबर और औरंगज़ेब शामिल थे, द्वारा दिए गए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खम्बात का गिरजाघर

यह उद्धरण उस फ़रमान (बादशाह के हुक्मनामे) का अंश है जिसे 1598 में अकबर ने जारी किया :

हमारे बुलंद और मुकद्दस (पवित्र) ज़ेहन में पहुँचा है कि यीशु की मुकद्दस जमात के पादरी खम्बायत गुजरात के शहर में इबादत के लिए (गिरजाघर) एक इमारत की तामीर (निर्माण) करना चाहते हैं;

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

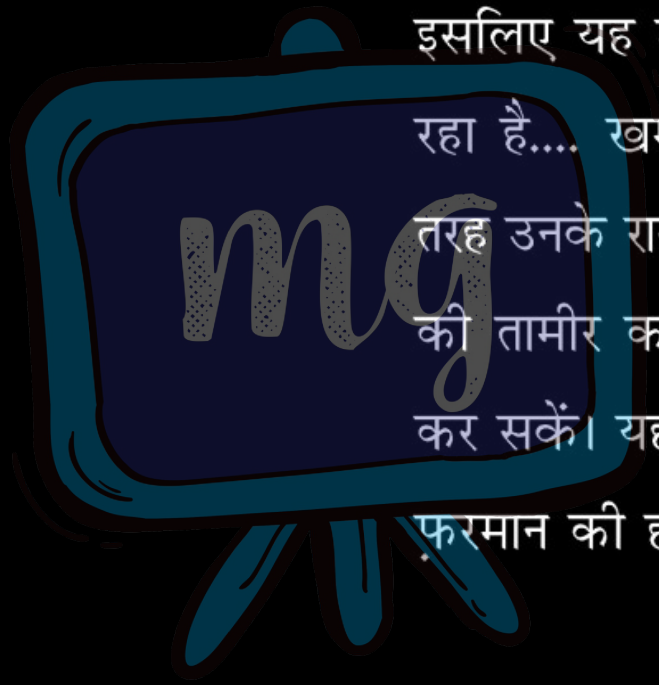

इसलिए यह शाही फ़रमान.... जारी किया जा रहा है.... खम्बायत के महानुभाव किसी भी तरह उनके रास्ते में न आएँ और उन्हें गिरजाघर की तामीर करने दें जिससे वे अपनी इबादत कर सकें। यह ज़रूरी है कि बादशाह के इस फ़रमान की हर तरह से तामील (पालन) हो।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

लोक प्रचलन में इस्लाम

इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए वे शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदराज़ तक और विभिन्न सामाजिक समुदायों–किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी के बीच फैल गए। जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसकी पाँच मुख्य 'बातें' मानीं :

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. अल्लाह एकमात्र ईश्वर है; पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत (शाहद) हैं;
2. दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जानी चाहिए;
3. खैरात (ज़कात) बाँटनी चाहिए;
4. रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना चाहिए
5. हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan

समुदायों के नाम

- हम अधिकतर हिन्दू और मुसलमान जैसे शब्दों को धार्मिक समुदायों का घोतक मान लेते हैं।
- किन्तु जिन इतिहासकारों ने आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य संस्कृत ग्रंथों और अभिलेखों का अध्ययन किया है वे इस तथ्य को उजागर करते है कि–

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इनमें मुसलमान शब्द का शायद ही कहीं प्रयोग हुआ है।
- लोगों का वर्गीकरण उनके जन्मस्थान के आधार पर किया गया था।
  - तुर्की मुसलमानों को तुरूष्क
  - तजाकिस्तान से आए लोगों को ताजिक
  - फारस के लोगों को पारसीक नाम से संबोधित किया गया था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इन प्रवासी समुदायों के लिए एक अधिक सामान्य शब्द म्लेच्छ था।

म्लेच्छ :-

यह बात को इंगित करता है कि ये वर्ण व्यवस्था के नियमों का पालन नहीं करते थे। और ऐसी भाषाएँ बोलते थे जो संस्कृत से नहीं उपजी थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. जिम्मी क्या है?

Q. भारत मे इस्लाम का आगमन किस प्रकार हुआ?

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सूफ़ीवाद और तसव्वुफ़

सूफ़ीवाद उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रित एक अंग्रेज़ी शब्द है। इस सूफ़ीवाद के लिए इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का इस्तेमाल होता है वह है तसव्वुफ़ (कल्पना, विचार, ख्याल)।

कुछ विद्वानों के अनुसार यह शब्द 'सूफ़' से निकलता है जिसका अर्थ ऊन है। यह उस खुरदुरे ऊनी कपड़े की ओर इशारा करता है जिसे सूफ़ी पहनते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

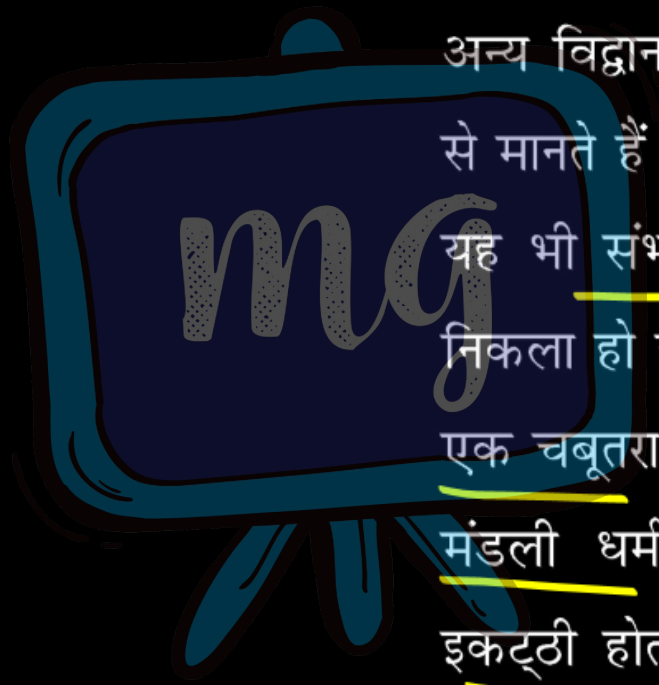

अन्य विद्वान इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' से मानते हैं जिसका अर्थ है साफ़ (पवित्र)। यह भी संभव है कि यह शब्द 'सफ़ा' से निकला हो जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ निकट अनुयायियों की मंडली धर्म के बारे में जानने के लिए इकट्ठी होती थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सूफ़ीमत का विकास

- इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफ़ी कहा जाने लगा।
- इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल (आदर्श मानव) बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

खानकाह और सिलसिला :

- ग्यारहवीं शताब्दी तक आते-आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था।
- सूफी अपने को एक संगठित समुदाय-खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे।
- खानकाह का नियंत्रण शेख/ पीर अथवा मुर्शीद के हाथ में था।
- वे अनुयायियों की भर्ती करते थे और अपने वारिस (खलीफा) की नियुक्ति करते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सूफी शब्दावली

- खानकाह – सूफी संत का आध्यात्मिक क्षेत्र (आश्रम)
- शेख / पीर – गुरु
- मुर्शिद – शिष्य
- वारिस / खलीफा – उत्तराधिकारी

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

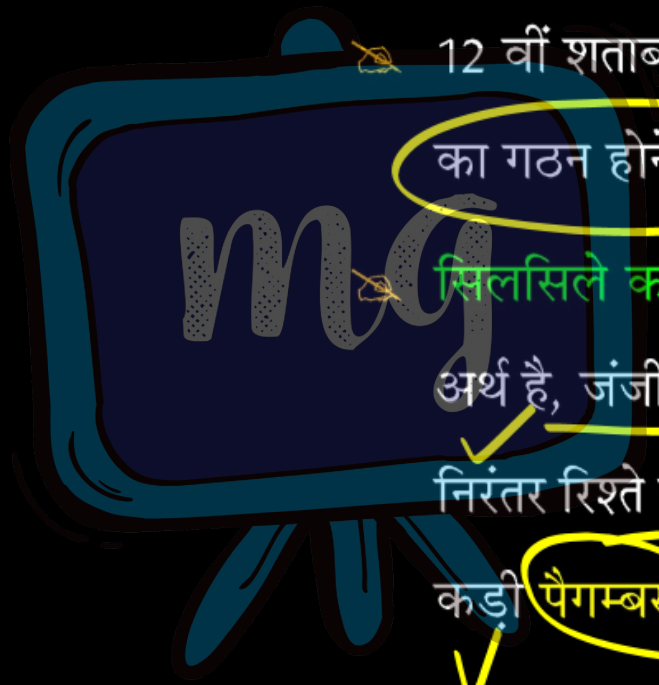

- 12 वीं शताब्दी के आस-पास सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा था।
- सिलसिले का अर्थ :- सिलसिले का शाब्दिक अर्थ है, जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की द्योतक है जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की खासतौर से उनकी बरसती के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।
- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था।
- इस तरह शेख का वली के रुप में आदर करने की परिपाटी शुरु हुई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

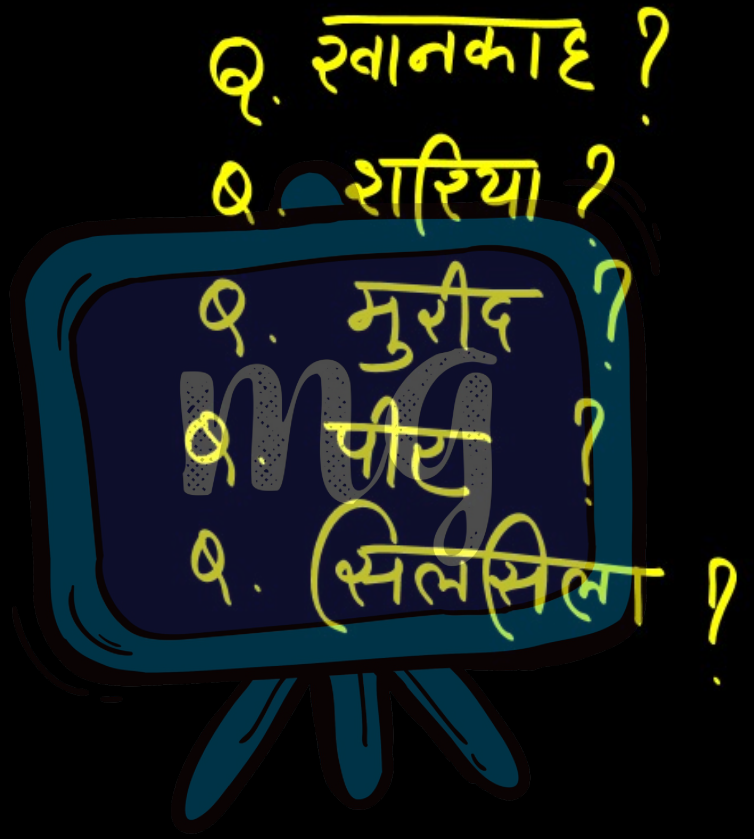

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सिलसिलों के नाम

ज़्यादातर सूफ़ी वंश उन्हें स्थापित करने वालों के नाम पर पड़े। उदाहरणत:, कादरी सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी के नाम पर पड़ा। कुछ अन्य सिलसिलों का नामकरण उनके जन्मस्थान पर हुआ जैसे चिश्ती नाम मध्य अफगानिस्तान के चिश्ती शहर से लिया गया।